बड़े लोगों का बचपन - बेसी बम्बर - सोशलिस्ट राजनेता

राजनीति में उनका करियर तब शुरू हुआ जब वो तीन सप्ताह की थीं.

जब पा बम्बर ने अपना सिर हिलाया और आह भरी तो किसी ने भी उन पर ध्यान नहीं दिया. वो समाजवाद में दृढ़ता से विश्वास करते थे क्योंकि वो खुद एक कामकाजी आदमी थे, लेकिन वो खुद इसके बारे में चिल्लाते हुए सड़कों पर धरना नहीं देते थे, जैसा कि उनकी पत्नी अक्सर करती थीं.

वो लिवरपूल के कुछ भाग्यशाली लोगों में से थे. 1907 की उस सर्दी में हजारों मेहनतकश बेरोजगारी और भुखमरी का शिकार थे. लेकिन पा के पास एक बुकबाइंडर की नौकरी थी. उन्हें सप्ताह में 27/6 मिलते थे. उनकी बेटियाँ स्वस्थ थीं और शालीन कपड़े पहनती थीं. वे अच्छा भोजन करते थे और उनका घर साफ और आरामदायक था.

लेकिन कुछ ही गज की दूरी पर कहानी काफी अलग थी. उनकी गली में कई ऐसे मर्द थे जो एक साल से बेरोज़गार थे. उन्हें कोई बेरोज़गारी भत्ता नहीं मिलता था, और जीवित रहने के लिए उन्हें भीख माँगनी पड़ती थी. वे दुबले-पतले और जर्जर थे और उनकी पत्नियों और बच्चों के पास जूते तक नहीं थे. उनके घर बिना फर्नीचर के थे क्योंकि उन्होंने अपना हर सामान गिरवी रख दिया था या बेच दिया था. कभी-कभी उन्हें सूप-रसोई से मुफ्त सूप का एक कटोरा मिलता था जो पूरा परिवार मिलकर साझा करता था. अक्सर, यह उनके दिन का एकमात्र भोजन होता था. बच्चे और वयस्क दोनों बीमार और कमजोर थे और आसानी से गंभीर बीमारियों की चपेट में आ जाते थे.

"अब उस चीनी के कटोरे से दूर हो जाओ, लिज़ी!" एक तेज आवाज चिल्लाई, और फिर लिज़ी बम्बर अपराधबोध से पीछे हट गई. उसकी दादी अंधी थी, फिर भी उन्हें हमेशा पता चल जाता था कि लिज़ी कब चीनी चोरी कर रही थी. ओह, वैसे भी अब चाय का समय हो गया था, क्योंकि माता-पिता जल्द ही वापस आने वाले थे.

जल्द ही केतली खुले चूल्हे पर सुगबुगा रही थी और प्याले-तश्तरी की बगल में, मेज पर ब्रेड और मक्खन की एक बड़ी प्लेट रखी थी. कोई केक नहीं था - उन दिनों बम्बर वो खरीद नहीं कर सकते थे - लेकिन डबलरोटी घर की बनी थी और निश्चित रूप से अच्छी थी.

फिर लिज़ी ने चाय बनाई उसकी छोटी बहन एनिड ने मेज के चारों ओर कुर्सियाँ लगाईं और वे अपनी दादी के साथ बतियाने लगी.

हॉल में तेज़ कदमों की आहट सुनाई दी और माँ बम्बर अंदर आईं. वो एक छोटी, दयालु दिखने वाली महिला थीं, जिनकी चमकदार आँखें और सुंदर, मुलायम बाल थे. कोई भी उन्हें देखकर यह अंदाज़ा नहीं लगा था कि वो लोगों की भीड़ के सामने सड़क के किनारे खड़ी होकर दृढ़ता से उनसे समाजवादी बनने को कह सकती थीं.

थोड़ी देर बाद पा अंदर आए और जल्द ही पूरा परिवार मेज के चारों ओर बैठ गया. पा चुपचाप बैठे रहे, जबकि उनकी पत्नी और दो बेटियां लगातार बातें करती रहीं. माँ पूरे दिन बाहर रहती थीं, बेरोजगारों को कटोरों में सूप परोसती थीं. अब वो लिजी को उस शाम की राजनीतिक बैठक के बारे में बता रही थीं.

बाएं: बेसी की मां ने दिखाया कि उनके पास राजनीति और अपने बच्चों दोनों के लिए समय था.

ऐसा लगता था सरकार को कोई परवाह नहीं थी. लिजी की मां जैसे लोगों ने ही सरकार पर दबाव बनाया था. उन्होंने कार्यकर्ताओं को यह दिखाया कि सरकार तभी सुनेगी जब लोग सड़क पर उतरेंगे.

भले ही माँ बम्बर गरीबों के पक्ष में थीं, लेकिन कई पुरुष ऐसे थे जो मानते थे कि महिलाओं को राजनीति में नहीं आना चाहिए. एक बार जब वो सार्वजनिक भाषण दे रही थीं तो एक आदमी चिल्लाया: "घर जाओ और अपने गंदे बच्चों को नहलाओ!"

अगली रात जब माँ फिर से बोलने के लिए वापस आईं, तब लिज़ी और एनिड को भी अपने साथ लाईं. दोनों बड़े करीने से कपड़े पहने थीं और साबुन से धुले उनके चेहरे चमक रहे थे.

"यह रहे मेरे गंदे बच्चे!" माँ बम्बर ने कहा.

लिजी तीन सप्ताह की उम्र में अपनी पहली समाजवादी बैठक में गई थी. वो लगभग जन्म से ही समाजवादी थी. वो बड़े होकर सुंदर, लंबी, मजबूत और बहुत सक्रिय बनी.

उसे साइकिल चलाना, मीलों पैदल चलना और विशेष रूप से तैरना पसंद था. वो इतनी ऊर्जा से भरी थी कि वो कभी भी स्थिर नहीं बैठ सकती थी. अक्सर जब परिवार ट्राम में बैठता तो लिजी मंज़िल तक जल्दी पहुँचने के लिए ट्राम के आगे दौड़ती थी!

उसने 14 साल की उम्र में उसने स्कूल छोड़ दिया और एक बीज व्यापारी के लिए काम किया. लेकिन जल्द ही वो उससे थक गई. फिर उसने को-ऑपरेटिव स्टोर्स में काम किया लेकिन उसका दिल पहले से ही राजनीति में था.

चूंकि एलिजाबेथ के उसी नाम के दो अन्य दोस्त थे, इसलिए भ्रम को दूर करने के लिए लिज़ी ने अपना नाम बेसी रख लिया.

बेसी बम्बर हर जगह मौजूद होती थी, वो सभाओं में भाषण देती थी, कार्यकर्ताओं से लड़ने को कहती थी. प्रथम विश्व-युद्ध समाप्त होने के बाद और अधिक लोग बेरोजगार हो गए थे. माँ बम्बर ने हजारों महिलाओं को यूनियनों में संगठित किया और बेहतर वेतन पाने के लिए लिवरपूल की फैशनेबल सड़कों पर ऊपर-नीचे मार्च किया और धरना दिया. अक्सर परिवार में केवल पत्नी ही कमाने वाली होती थी क्योंकि वो सिलाई कर सकती थी, बोरे सिल सकती थी या रस्सी बुन सकती थी.

एक बार कुछ रूढ़िवादियों ने बेसी की एक बैठक पर हमला किया और लाल झंडे, समाजवादियों के बैनर को गिराने की कोशिश की. फिर बेसी ने झंडा पकड़ा और वो भागी. तब आधी सभा ने उसका पीछा किया. समाजवादी मुख्यालय पहुंचने के बाद बेसी ने खुद को ऊपर के कमरे में बंद कर लिया और उसने खिड़की से झंडा लहराया!

बेस्सी ने 1922 में जैक ब्रैडॉक से शादी की. लड़ाकू बेसी ब्रैडॉक, मेंबर ऑफ़ पार्लियामेंट के रूप में, 20 से अधिक वर्षों से ब्रिटिश राजनीति में प्रसिद्ध रहीं. वो लिवरपूल सिटी में काउंसलर भी थीं, जैसे कि उनके पति थे, जब तक कि 1963 में उनकी मृत्यु नहीं हो गई.

बेसी ने बुरे पुराने खराब दिनों को बीतते हुए देखे, लेकिन वो अभी भी किसी भी अन्याय के खिलाफ पहले युद्ध में उतरने को तैयार रहती हैं. जब वो रिटायर होंगी, तो उनके बिना हाउस ऑफ कॉमन्स पहले जैसा नहीं रहेगा.

दाएं: बेसी ने हमलावरों से लाल झंडा छीना.